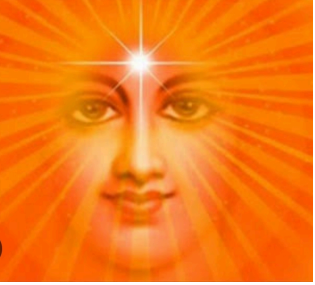


25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - पावन बनने का एकमात्र उपाय है -
बाप की याद, याद की मेहनत ही अन्त में काम
आयेगी"

ये पक्का समझ लो..

दुनियावी सभी प्राप्तियां धरी की धरी रह जाएगी।



प्रश्न:- संगम पर कौन सा तिलक दो तो स्वर्ग की
राजाई का तिलक मिल जायेगा?

उत्तर:- संगम पर यही तिलक दो कि हम आत्मा
बिन्दी हैं, हम शरीर नहीं। अन्दर में यही घोटते रहो
कि हम आत्मा हैं, हमें बाप से वर्सा लेना है। बाबा
भी बिन्दी है, हम भी बिन्दी हैं। इस तिलक से स्वर्ग
की राजाई का तिलक प्राप्त होगा। बाबा कहते हैं
मैं गैरन्टी करता हूँ - तुम याद करो तो आधाकल्प
के लिए रोने से छूट जायेंगे।

The World Almighty's Guarantee



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

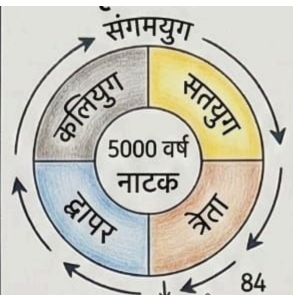
25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



ओम् शान्ति। यह फुरना चाहिए कि मुझ आत्मा को बाप को जरूर याद करना है तब पावन बन सकते हैं। मेहनत जो कुछ है, वह यही है, जो मेहनत बच्चों से पहुँचती नहीं है। माया बहुत हैरान करती है। एक बाप की याद भुला देती है, दूसरे की याद आ जाती है। बाप अथवा साजन को याद नहीं करते हैं। ऐसे साजन को तो कम से कम 8 घण्टा याद करने की सर्विस देनी है अर्थात् साजन को मदद देनी है - याद करने की। अथवा बच्चों को बाप को याद करना चाहिए - यह है बहुत बड़ी मेहनत। गीता में भी है मनमनाभव। बाप को याद करते रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते एक बाप को ही याद करते रहो और कुछ नहीं। पिछाड़ी को यह याद ही काम आयेगी। अपने को आत्मा अशरीरी समझो, अब हमको वापिस जाना है। यह मेहनत बहुत करनी है। सवेरे स्नान आदि करके फिर एकान्त में ऊपर छत पर वा हाल में आकर बैठ जाओ। जितना एकान्त हो उतना अच्छा है। हमेशा यही ख्याल करो कि हमको बाप को याद करना है। बाप से पूरा वर्सा लेना है। यह मेहनत हर 5

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



हजार वर्ष बाद तुमको करनी पड़ती है। सतयुग,

त्रेता, द्वापर, कलियुग - कहाँ भी तुमको यह मेहनत

नहीं करनी पड़ेगी। इस संगम पर ही तुमको बाप

कहते हैं कि मुझे याद करो, बस। यही वेला है जब

बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप आते भी संगम

पर हैं और कभी बाप आते ही नहीं। तुम भी

नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। बहुत बच्चे

बाप को भूल जाते हैं इसलिए बहुत धोखा खाते हैं,

रावण बहुत धोखेबाज है। आधाकल्प का यही

दुश्मन है इसलिए बाप कहते हैं रोज़ सवेरे उठकर

यह विचार सागर मंथन करो और यही चार्ट रखो -

कितना समय हमने बाप को याद किया! कितनी

जंक उतरी होगी! सारा मदार याद के ऊपर है।

बच्चों को पूरी कोशिश करनी है, अपना पूरा वर्सा

पाने लिए। नर से नारायण बनना है। यह है सच्ची

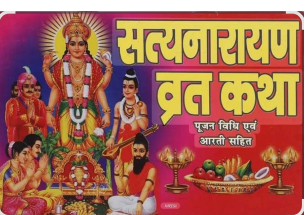
सत्य नारायण की कथा। भक्त लोग पूर्णमासी के

दिन सत्य नारायण की कथा करते हैं। अभी तुम

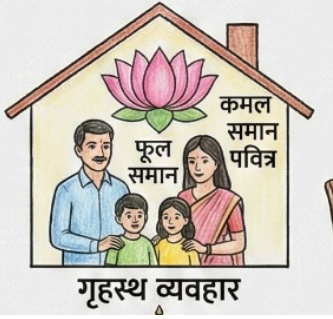
जानते हो 16 कला सम्पूर्ण बनना है। वह बनेंगे

सत्य बाप को याद करने से। बाप है श्रीमत देने

वाला। बाप कहते हैं गृहस्थ में रहो, धन्धा-धोरी



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



That's All

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आदि कुछ भी करो। बाप को याद जरूर करना है

और पावन बनना है। बस। याद नहीं करेंगे तो

रावण से कहाँ न कहाँ धोखा खाते रहेंगे इसलिए

मूल बात समझाते हैं याद की। शिवबाबा को याद

करना है। देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं

उनको भूल अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप

बार-बार समझाते हैं - अपने को आत्मा समझ

बाप को याद करना है। नहीं तो फिर अन्त में बहुत

-बहुत पछतायेंगे। बहुत धोखा खायेंगे। कोई ऐसा

जोर से थप्पड़ लगेगा जो माया एकदम काला मुँह

करा देगी। बाप आये हैं गौरा मुँह बनाने। इस समय

सब एक दो का काला मुँह करते रहते हैं। गौरा

बनाने वाला एक ही बाप है, जिसकी याद से तुम

गोरे स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह है ही पतित

दुनिया। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने।

बाकी तुम्हारे धन्धे-धोरी आदि से बाबा का कोई

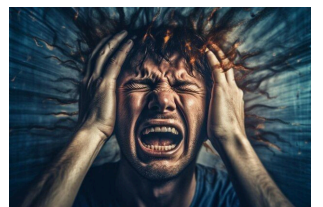
सम्बन्ध नहीं है। शरीर निर्वाह अर्थ तुमको जो

करना है सो करो। बाप तो सिर्फ कहते हैं

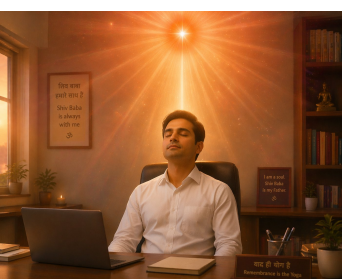
मनमनाभव। तुम कहते भी हो हम कैसे पावन

दुनिया का मालिक बनें। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे

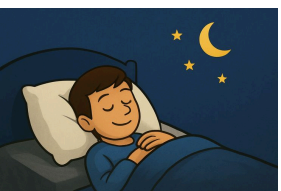
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



Mind very well...



25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



याद करो। बस। और कोई उपाय पावन बनने का है नहीं। कितना भी दान-पुण्य आदि करें, कितनी भी मेहनत करें। चाहे आग से आते जाते रहें, कुछ भी काम नहीं आ सकता - सिवाए एक बाप की याद के। बहुत सिम्पल बात है, इसको कहा जाता है - सहज योग। अपने से पूछो हम अपने मीठे-मीठे बाप को सारे दिन में कितना याद करते हैं! नींद में तो कोई पाप नहीं होते हैं। अशरीरी हो जाते हैं। बाकी दिन में बहुत पाप होते रहते हैं और पुराने पाप भी बहुत हैं। मेहनत करनी है याद की। यहाँ आते हो तो यह मेहनत करनी है। बाहर के वाह्यात संकल्पों को उड़ा दो। नहीं तो वायुमण्डल बड़ा खराब कर देते हैं। घर के, खेती-बाड़ी के ख्यालात चलते रहते हैं। कभी बच्चे याद पड़ेंगे, कभी गुरू की याद आयेगी। संकल्प चलते रहेंगे तो वायुमण्डल को खराब कर देंगे। मेहनत नहीं करने वाले विघ्न डालते हैं। यह इतनी महीन बातें हैं। तुम भी अभी जानते हो - फिर कभी नहीं जानेंगे। बाप अभी ही वर्सा देते हैं फिर आधाकल्प के लिए निश्चित हो जाते हैं। लौकिक बाप के फुरने

Point to be Noted

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

(ख्यालात) और बेहद बाप के फुरने में कितना

अन्तर है। बाप कहते हैं कि भक्ति मार्ग में मुझे

कितना फुरना रहता है। भगत कितना घड़ी-घड़ी

याद करते हैं। सतयुग में कोई भी याद नहीं करते।

बाप कहते हैं कि तुमको इतना सुख देता हूँ जो

तुमको मुझे वहाँ याद करने की दरकार ही नहीं

रहेगी। हम जानते हैं हमारे बच्चे सुखधाम,

शान्तिधाम में बैठे हैं। दूसरा कोई मनुष्य समझ न

सके। ऐसे बाप में निश्चयबुद्धि होने में माया विघ्न

डालती है। बाप कहते हैं कि सिर्फ मुझे याद करो

तो तुम्हारे में जो अलाए पड़ गई है, चांदी, तांबा,

लोहा...वह निकल जायेगी। गोल्डन एज से

सिलवर में आने से भी दो कला कम होती हैं। यह

बातें तुम सुनते और समझते हो। जो सच्चा ब्राह्मण

होगा उनको अच्छी रीति बुद्धि में बैठेगा, नहीं तो

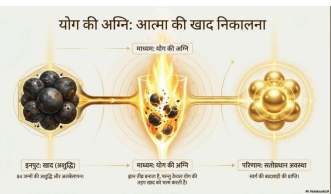
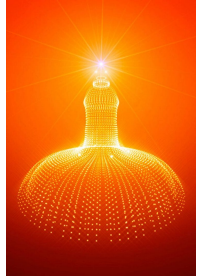
बैठेगा नहीं। याद टिकेगी नहीं। सारा मदार बाप को

याद करने पर है। बार-बार कहते हैं बच्चे बाप को

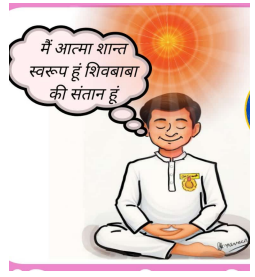
याद करो। यह बाबा भी कहेंगे शिवबाबा को याद

करो। शिवबाबा खुद भी कहेंगे मुझ बाप को याद

करो। आत्माओं को कहते हैं हे बच्चों। वह



25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



निराकार परमात्मा भी आत्माओं को कहेंगे। मूल

बात ही यह है। कोई भी आये तो उनको पहले-

पहले बोलो कि अल्फ को याद करो और कोई

तीक-तीक नहीं करनी है। सिर्फ बोलो - अपने को

आत्मा समझ बाप को याद करो। यही अन्दर

घोटना है। हम आत्मा हैं, गाते भी हैं ना तुलसीदास

चंदन घिसे, तिलक देत रघुवीर...तिलक कोई स्थूल

थोड़ेही है। तुम समझते हो कि तिलक वास्तव में

इस समय का यादगार है। तुम याद करते रहते हो

गोया राजाई का तिलक देते हो। तुमको राजाई का

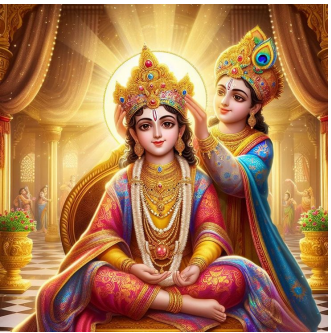
तिलक मिलेगा, डबल सिरताज बनेंगे। राजाई का

तिलक मिलेगा अर्थात् स्वर्ग के महाराजा, महारानी

बनेंगे। बाप कितना सहज बताते हैं। बस सिर्फ यह

याद करो - हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। हमको बाप

से वर्सा लेना है।



तुम जानते हो हम आत्मा बिन्दी मिसल हैं, बाबा

भी बिन्दी है। बाबा ज्ञान का सागर, सुख का सागर

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। वह हमको वरदान देते हैं। इनके ^{अरुमा} बाजू में आकर

बैठते हैं। गुरू अपने शिष्य को बाजू में बिठाए

सिखाते हैं। यह भी बाजू में बैठे हैं। बच्चों को सिर्फ

कहते हैं अपने को आत्मा समझो, मामेकम् याद

करो। सतयुग में भी तुम अपने को आत्मा समझते

हो, परन्तु बाप को नहीं जानते हो। हम आत्मा

शरीर छोड़ते हैं फिर दूसरा लेना है। ड्रामा अनुसार

तुम्हारा पार्ट ही ऐसा है इसलिए तुम्हारी आयु वहाँ

बड़ी रहती है, पवित्र रहते हो। सतयुग में आयु बड़ी

रहती है, कलियुग में छोटी हो जाती है। वहाँ हैं

योगी, यहाँ हैं भोगी। पवित्र होते हैं योगी। वहाँ

रावण राज्य ही नहीं है। आयु बड़ी रहती है। यहाँ

आयु कितनी छोटी होती है, इसको कर्म भोग कहा

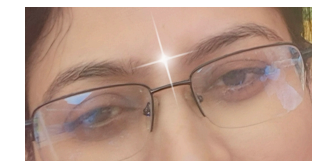
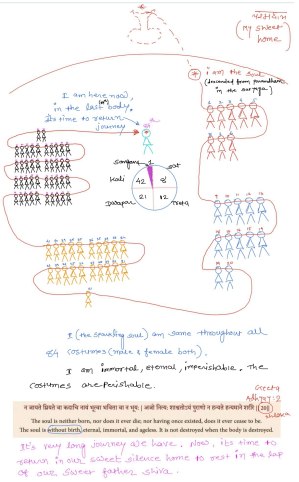
जाता है। वहाँ अकाले मृत्यु कभी होता नहीं। तो

बाप कहते हैं कि बाप को पहचाना है तो श्रीमत

पर चलो। एक बाप को याद करो। अपने को

आत्मा समझो। हमको अब जाना है, यह शरीर

छोड़ना है। बाकी टाइम सर्विस में लगाना है।

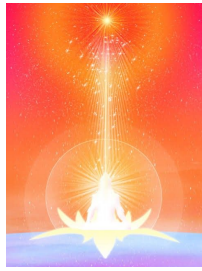


Points:

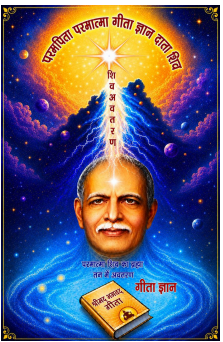
M.imp.

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

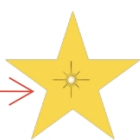
तुम बच्चे बहुत गरीब हो इसलिए बाप को तरस पड़ता है। तुम बुढ़ियों, कुब्जाओं आदि को कोई तकलीफ नहीं देते हैं। बुढ़ी को कुब्जा कहा जाता है। बुढ़ियों को समझाया जाता है - बाप को याद करो। तुमसे कोई पूछे कहाँ जाती हो? बोलो, गीता पाठशाला में जाते हैं।



बच्चे प्रदर्शनी आदि पर कितना खर्चा करते हैं, लिखते भी हैं फलाना अच्छा प्रभावित हुआ। परन्तु बाबा कहते हैं एक भी ऐसे नहीं लिखता कि बरोबर इस समय बेहद का बाप इस ब्रह्मा तन में आया हुआ है, उससे ही स्वर्ग का वर्सा मिल सकता है। बाबा समझ जाते हैं कि एक को भी निश्चय नहीं हुआ है। सिर्फ प्रभावित होते हैं, यह ज्ञान बहुत अच्छा है। सीढ़ी ठीक रीति से दिखाई है। परन्तु खुद योग में रह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें, वह नहीं करते। सिर्फ कहते हैं - समझानी बहुत अच्छी है, परमात्मा से वर्सा पाने की। परन्तु खुद पायें, वह



तमो प्रधान



सतो प्रधान

योग

धारणा

सेवा

M.imp.

पुछो अपने आप से...

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

नहीं। कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते हैं, प्रजा ढेर

बनेगी। बाकी राजा बनें वह मेहनत है। हर एक

अपनी दिल से पूछे कि हम कहाँ तक बाप की याद

में हर्षित रहते हैं? हम फिर से सो देवता बनते हैं।

ऐसे-ऐसे अपने साथ एकान्त में बैठ बातें करो, ट्राई

करके देखो। बाप को याद करते रहो तो बाप

गैरन्टी देते हैं - तुम आधाकल्प कभी रोयेंगे नहीं।

अभी तुम कहते हो बाबा आकर हमको रावण

माया पर जीत पहनाते हैं। जो जितनी मेहनत

करते हैं, अपने लिए ही करते हैं। फिर तुम आयेंगे

नई दुनिया में। पुरानी दुनिया का हिसाब-किताब

भी चुकू करना है जबकि तुमको तमोप्रधान से

सतोप्रधान बनना है। पावन बनने की युक्ति भी

बताते हैं। यह है कयामत का समय, सबका विनाश

होना है। नई दुनिया की स्थापना होनी है। तुम

जानते हो हम इस मृत्युलोक में यह शरीर छोड़

फिर नई दुनिया अमरलोक में आयेंगे। हम पढ़ते ही

हैं नई दुनिया के लिए और कोई ऐसी पाठशाला

नहीं, जहाँ भविष्य के लिए पढ़ाते हो। हाँ, जो बहुत

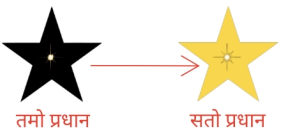
दान-पुण्य करते हैं तो राजा के पास जन्म लेते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



Mind very well...

बाबा पे कोई उपकार नहीं करते हो..



जैसा कर्म वैसा फल
दुःखीय जन्म दान करते हैं तो देवता के रूप में जन्म लेते हैं।

- दान-पुण्य करने वाले अमरत्व बनाकर जन्म लेते हैं।
- स्वास्थ्य का दान करने वाले स्वस्थ बनाकर जन्म लेते हैं।
- शिक्षा-दान करने वाले विद्वान के रूप में जन्म लेते हैं।
- हिंसा करने वाले अर्यंग बन जन्म लेते हैं।
- सेवा लेते हैं तो सेवा करनी पड़ती है।
- सोरी करते हैं तो जेल की सजा भोगते हैं।

यह सृष्टि नाटक सभी दुनिया में हर कोई अपने कर्म के अनुसार पाप और पुण्य के परिणामों का अनुभव करता है।



25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

गोल्डन स्पून इन माउथ कहा जाता है। सतयुग में

तुमको मिलता है, कलियुग में भी जो राजाओं के

पास जन्म लेते हैं उनको भी मिलता है फिर भी

यहाँ तो अनेक प्रकार के दुःख रहते हैं। तुमको तो

भविष्य 21 जन्म के लिए कोई दुःख नहीं होगा।

कभी बीमार नहीं पड़ेंगे, गोल्डन स्पून इन स्वर्ग।

यहाँ है अल्पकाल के लिए राजाई। तुम्हारी है 21

जन्म के लिए। बुद्धि से अच्छी रीति काम लेना है,

फिर समझाना है। ऐसे नहीं कि भक्ति मार्ग में राजा

नहीं बन सकते हैं। कोई कॉलेज अथवा हॉस्पिटल

बनाते हैं तो उनको भी एवजा मिलता है।

हॉस्पिटल बनाते हैं तो दूसरे जन्म में अच्छी

तन्दरूस्ती रहेगी। कहते हैं ना - इनको सारी आयु

में बुखार भी नहीं हुआ। बड़ी आयु होती है। बहुत

दान आदि किया है, हॉस्पिटल आदि बनाते हैं तब

आयु बढ़ती है। यहाँ तो योग से तुम एवरहेल्दी-

वेल्दी बनते हो। योग से तुम 21 जन्म के लिए

शफा पाते हो। यह तो बहुत बड़ी हॉस्पिटल, बहुत

बड़ी कॉलेज है। बाप हर बात अच्छी रीति

समझाते हैं। बाप कहते हैं जिसको जहाँ मज़ा



So, Value this Time

अभी नहीं तो कभी नहीं

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है, मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।" - निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे... कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना, जब की स्वयं भगवान(पारस मणी) हमें मिल गए हैं और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू देकर चल रहे हैं...?

रणा सेवा M.imp.

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

आये, जहाँ दिल लगे, वहाँ जाकर पढ़ाई पढ़ सकते हैं। ऐसे नहीं कि हमारे सेन्टर पर आयें, इनके पास क्यों जाते हैं। नहीं, जिसको जहाँ चाहिए वहाँ

जाये। बात तो एक ही है। मुरली तो पढ़कर सुनाते

हैं। वह मुरली यहाँ से जाती है फिर कोई विस्तार से अच्छा समझाते हैं, कोई सिर्फ पढ़कर सुनाते हैं।

भाषण करने वाले अच्छी ललकार करते होंगे।

कहाँ भी भाषण हो - पहले-पहले बताओ

शिवबाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ

बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे

और पावन बन पावन दुनिया का मालिक बनेंगे।

कितना सहज समझाते हैं। अच्छा।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

So, simple

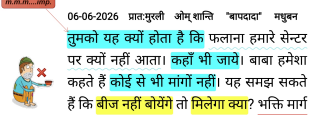
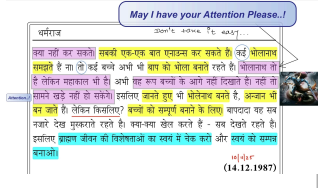
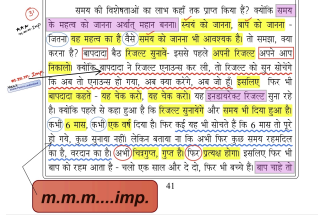
Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



आपका शुक्रिया

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...



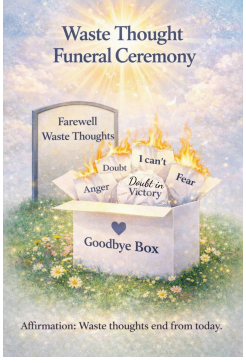
मीठी मुरली मेरे प्रियतम का प्रेम से भरा पत्र.

मीठे बच्चे

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) बाहर के वाह्यात (व्यर्थ) ख्यालातों को छोड़

एकान्त में बैठ याद की मेहनत करनी है। सवेरे-

सवेरे उठकर विचार सागर मंथन करना और

अपना चार्ट देखना है।



2) जैसे भक्ति में दान-पुण्य का महत्व है, ऐसे ज्ञान

मार्ग में याद का महत्व है। याद से आत्मा को

एवरहेल्दी-वेल्दी बनाना है। अशरीरी रहने का

अभ्यास करना है।



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

25-06-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: कम्बाइन्ड रूप की सेवा द्वारा आत्माओं को समीप सम्बन्ध में लाने वाले कम्बाइन्ड रूपधारी भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

Mind very well...

सिर्फ आवाज द्वारा सेवा करने से प्रजा बनती जा रही है लेकिन आवाज से परे स्थिति में स्थित हो फिर आवाज में आओ,

अव्यक्त स्थिति और फिर आवाज - ऐसे कम्बाइन्ड रूप की सेवा वारिस बनायेगी।

आवाज द्वारा प्रभावित हुई आत्मार्ये अनेक आवाज सुनने से आवागमन में आ जाती हैं लेकिन

कम्बाइन्ड रूपधारी बन कम्बाइन्ड रूप की सेवा करो तो उन पर किसी भी रूप का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

स्लोगन: साधनों में बेहद के वैराग्यवृत्ति की साधना मर्ज होने न दो।

Points: ज्ञान य



ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।



सरलता



सहन शक्ति

Characteristics of

जो सहनशील बच्चे हैं वे अपनी सहनशीलता की शक्ति से कैसे भी कठोर संस्कार वाले को, कैसे भी कठिन कार्य को शीतल बना देते हैं वा सहज कर देते हैं।

सहनशीलता के गुण वाला गम्भीर होगा और

गहराई में जायेगा।

वह कभी घबरायेगा नहीं। गहराई में जाकर सफलता प्राप्त करेगा।

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26

Click

All अव्यक्त इशारे May 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज़ की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज़ देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज़ का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज़ का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज़ की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ओम शांति ,

1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

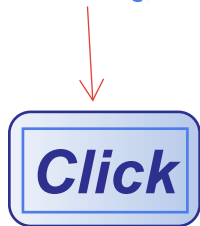
इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि

आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रेवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

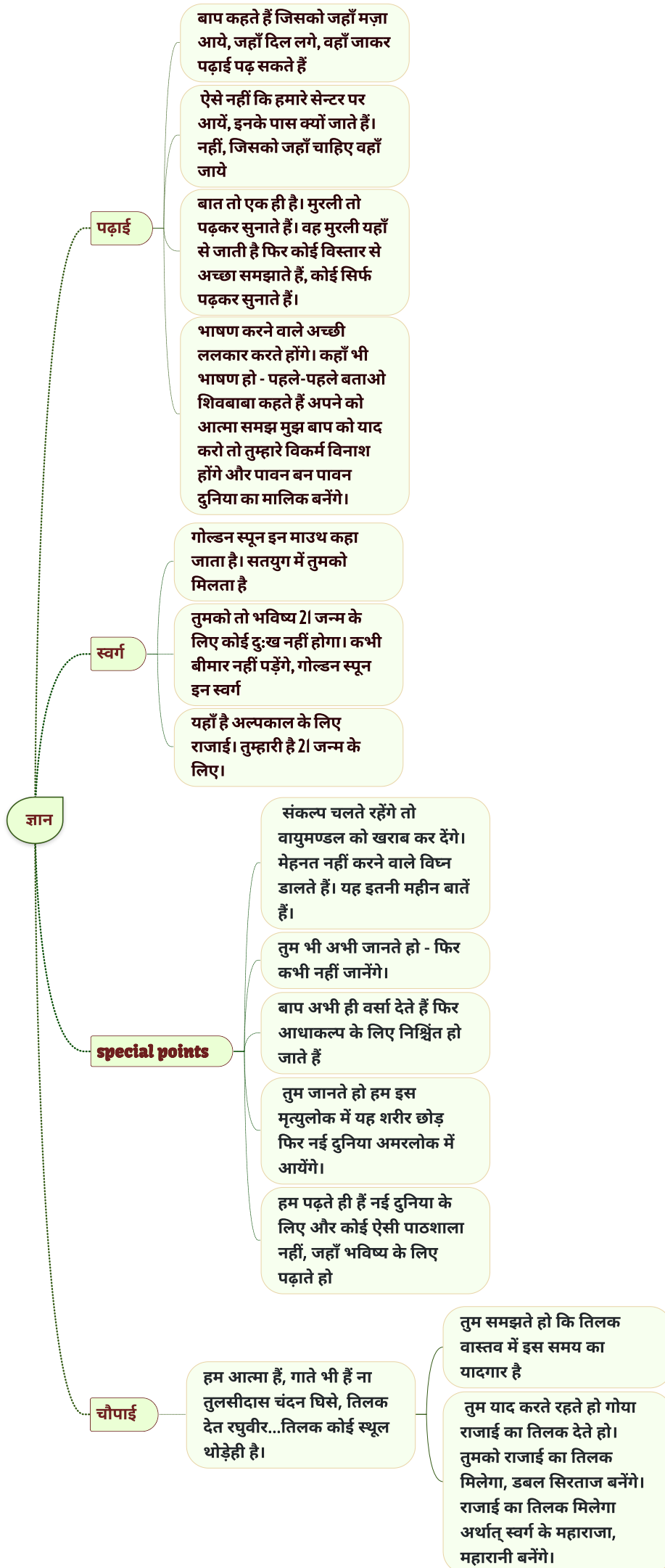


इस mind map में,

मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।

अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।





योग

बाकी दिन में बहुत पाप होते रहते हैं और पुराने पाप भी बहुत हैं। मेहनत करनी है याद की। यहाँ आते हो तो यह मेहनत करनी है।

हर एक अपनी दिल से पूछे कि हम कहाँ तक बाप की याद में हर्षित रहते हैं?

हम फिर से सो देवता बनते हैं। ऐसे-ऐसे अपने साथ एकान्त में बैठ बातें करो, ट्राई करके देखो

बाप को याद करते रहो तो बाप गैरन्टी देते हैं - तुम आधाकल्प कभी रोयेंगे नहीं

यहाँ तो योग से तुम एवरहेल्दी-वेल्टी बनते हो।

योग से तुम 21 जन्म के लिए शफा पाते हो।'

अपने से पूछो हम अपने मीठे-मीठे बाप को सारे दिन में कितना याद करते हैं! नींद में तो कोई पाप नहीं होते हैं

बहुत सिम्पल बात है, इसको कहा जाता है - सहज योग

कितना भी दान-पुण्य आदि करें, कितनी भी मेहनत करें। चाहे आग से आते जाते रहें, कुछ भी काम नहीं आ सकता - सिवाए एक बाप की याद के।

बाप कहते हैं कि सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे में जो अलाए पड़ गई है, चांदी, तांबा, लोहा...वह निकल जायेगी।

सारा मदार बाप को याद करने पर है। बार-बार कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। यह बाबा भी कहेंगे शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा खुद भी कहेंगे मुझ बाप को याद करो

बस सिर्फ यह याद करो - हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। हमको बाप से वर्सा लेना है।

यह फुरना चाहिए कि मुझ आत्मा को बाप को जरूर याद करना है तब पावन बन सकते हैं

बाप अथवा साजन को याद नहीं करते

बच्चों को बाप को याद करना चाहिए - यह है बहुत बड़ी मेहनत।

बाप को याद करते रहो

पिछाड़ी को यह याद ही काम आयेगी

अपने को आत्मा अशरीरी समझो, अब हमको वापिस जाना है

सवरे स्नान आदि करके फिर एकान्त में ऊपर छत पर वा हाल में आकर बैठ जाओ

हमेशा यही खयाल करो कि हमको बाप को याद करना है। बाप से पूरा वर्सा लेना है

बाप कहते हैं रोज़ सवरे उठकर यह विचार सागर मंथन करो और यही चार्ट रखो - कितना समय हमने बाप को याद किया! कितनी जंक उतरी होगी!

याद नहीं करेंगे तो रावण से कहाँ न कहाँ धोखा खाते रहेंगे इसलिए मूल बात समझाते हैं याद की

बाप बार-बार समझाते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।

मेहनत जो कुछ है, वह यही है, जो मेहनत बच्चों से पहुँचती नहीं है

ऐसे साजन को तो कम से कम 8 घण्टा याद करने की सर्विस देनी है

अर्थात् साजन को मदद देनी है - याद करने की।

उठते-बैठते, चलते-फिरते एक बाप को ही याद करते रहो और कुछ नहीं

यह मेहनत बहुत करनी है

हमेशा यही खयाल करो कि हमको बाप को याद करना है।

सारा मदार याद के ऊपर है।

नहीं तो फिर अन्त में बहुत-बहुत पछतायेंगे। बहुत धोखा खायेंगे।

धारणा

बच्चों को पूरी कोशिश करनी है,
अपना पूरा वर्सा पाने लिए

नर से नारायण बनना है।

अभी तुम जानते हो 16 कला
सम्पूर्ण बनना है

वह बनेंगे सत्य बाप को याद
करने से।

बाप कहते हैं गृहस्थ में रहो,
धन्धा-धोरी आदि कुछ भी करो।
बाप को याद जरूर करना है
और पावन बनना है। बस

तुम कहते भी हो हम कैसे पावन
दुनिया का मालिक बनें।

जो सच्चा ब्राह्मण होगा उनको
अच्छी रीति बुद्धि में बैठेगा, नहीं
तो बैठेगा नहीं। याद टिकेगी
नहीं

जो जितनी मेहनत करते हैं,
अपने लिए ही करते हैं